ल्हासा की ओर (राहुल सांकृत्यायन)

पाठ का परिचय

यात्रा-वृत्तांत हिंदी-साहित्य की आधुनिक विधा है और राहुल सांकृत्यायन इस विधा के मुख्य रचनाकार। प्रस्तुत पाठ **'ल्हासा की ओर'** उनकी प्रथम तिब्बत यात्रा का संस्मरण है। उन्होंने यह यात्रा सन् 1929-30 में नेपाल के रास्ते की थी। यह उस समय की बात है, जब भारतीयों को तिब्बत यात्रा की अनुमति न थी, इसलिए उन्होंने यह यात्रा छद्मवेश में एक भिखारी के रूप में की थी। इस पाठ में लेखक ने तिब्बत की राजधानी ल्हासा की ओर जाने वाले दुर्गम पर्वतीय मार्गों का अत्यंत रोचक शैली में वर्णन किया है। इस यात्रा-वृत्तांत में जहाँ एक ओर तिब्बत और तिब्बती समाज की सभ्यता-संस्कृति का परिचय मिलता है, वहीं निर्जन पर्वतीय यात्रा के रोमांच का आनंद भी प्राप्त होता है।

पाठ का सारांश

'ल्हासा की ओर' महापंडित राहुल सांकृत्यायन द्वारा रचित एक यात्रा-वृत्तांत है। इसमें उन्होंने सन् 1929-30 ई० में अपनी नेपाल से तिब्बत की यात्रा के समय के दुर्गम रास्तों का रोमांचक वर्णन किया है। पाठ का सारांश इस प्रकार है–

नेपाल-तिब्बत मार्ग का महत्त्व–यह नेपाल से तिब्बत आने-जाने का मुख्य मार्ग है। फरी-कलिङ्पोङ् का मार्ग खुलने से पहले भारत का व्यापार इसी मार्ग से होता था। नेपाल-तिब्बत का यह मार्ग सैनिकों का भी मार्ग हुआ करता था। आज भी इस पर अनेक किले और चौकियाँ बनी हुई हैं। कभी यहाँ पर चीनी सेना भी रहती थी। आजकल अनेक फ़ौजी मकान गिर चुके हैं। कुछ दुर्ग आज इसलिए आबाद हैं, क्योंकि उनमें किसानों ने अपना निवास बना लिया है। ऐसे ही एक परित्यक्त चीनी किले में लेखक चाय पीने के लिए ठहरा था।

तिब्बत-निवासी और उनका सामाजिक जीवन–तिब्बत के निवासियों के जीवन में आराम और तकलीफ़ दोनों ही हैं। जाति-पाँति, छुआछूत आदि समाज में प्रचलित नहीं हैं। औरतों को परदा नहीं करना पड़ता। निम्नश्रेणी के भिखमंगों को छोड़कर किसी भी अपरिचित के घर के भीतर तक चले आने में किसी को आपत्ति नहीं। घर के भीतर सास या बहू उसके लिए चाय बना देती है। तिब्बत में चाय; मक्खन और सोडा-नमक मिलाकर और चोङी में कूटकर, दूध वाली चाय के रंग की बनाकर मिट्टी के टोंटीदार बरतन (खोटी) में रखकर परोसी जाती है।

ठहरने का प्रबंध–परित्यक्त चीनी किले में ठहरने के बाद जब लेखक वहाँ से चला तो एक आदमी राहदारी माँगने आ गया। लेखक ने अपनी और अपने साथी सुमति, जोकि मंगोल जाति का था, की चिटें उसे दे दीं। थोङ्ला के पहले के आखिरी गाँव में सुमति की पहचान से ठहरने के लिए अच्छी जगह की व्यवस्था हो गई। पाँच साल पहले जब वे यहाँ आए थे तो उन्हें एक गरीब के झोपड़े में ठहरना पड़ा था। अब वे घोड़ों पर सवार होकर एक भद्र यात्री के वेश में आए हैं। उस बार वे भिक्षुकों के वेश में थे। वहाँ के लोग शाम के वक्त प्रायः छङ् पीकर नशे में धुत्त पड़े रहते हैं।

डाँड़ा थोङ्ला का जंगल–डाँड़े तिब्बत के सबसे खतरनाक स्थल हैं। ये सोलह-सत्रह हज़ार फीट की ऊँचाई पर स्थित हैं। इतनी अधिक ऊँचाई के कारण यहाँ दूर-दूर तक गाँव दिखाई नहीं पड़ते। नदियों के मोड़ों और पहाड़ों के कोणों के कारण बहुत दूर तक आदमी के दर्शन नहीं होते। अत्यधिक ऊँचाई और निर्जनता के कारण ये चोरों-डकैतों की प्रिय जगहें हैं। यहाँ सरकार पुलिस पर भी व्यय नहीं करती। पुलिस-सुरक्षा आदि के प्रबंध नगण्य होने से यहाँ पर हत्या की वारदातें प्रायः होती रहती हैं। यहाँ डाकू पहले आदमी को मार डालते हैं, फिर माल लूटते हैं। हथियार का कानून न रहने के कारण यहाँ पर लोग लाठी की तरह पिस्तौल और बंदूक लिए फिरते हैं।

लेखक और सुमति को डाकुओं से उतना डर नहीं था; क्योंकि ये लोग भिखमंगों के वेश में यात्रा कर रहे थे। जहाँ कहीं भी वह खतरनाक स्थिति देखते, टोपी उतारकर जीभ निकालकर दया की भीख माँगने लगते।

घोड़ों पर सवारी–लेखक और उसके साथी को अगले दिन लह्कोर पहुँचना था। इसलिए लेखक की राय से दो घोड़ों पर सवार होकर 16-17 मील की ऊँची चढ़ाई चढ़ने का निर्णय लिया गया। दोपहर के समय वे लोग डाँड़े पर पहुँचे। समुद्रतल से 17-18 हज़ार फीट की ऊँचाई थी। उनके दाहिनी ओर पूरब से पश्चिम की तरफ़ हज़ारों श्वेत शिखर वाली बरफ़ीली चोटियाँ थीं। भीटे की ओर के पहाड़ बिलकुल नंगे थे। उन पर न बरफ़ थी और न हरियाली। सर्वोच्च स्थान पर डाँड़े के देव-स्थान को पत्थरों, सींगों, रंग-बिरंगी झंडियों आदि से सजाया गया था।

उतराई पर भटकाव–अब उतराई आ गई। लेखक का घोड़ा बहुत धीमे चल रहा था। धीरे-धीरे लेखक काफ़ी पिछड़ गया। लेखक उसे तेज़ चलाने का प्रयास करता तो वह और भी सुस्त पड़ जाता। एक स्थान पर आगे दोराहा था। लेखक बाएँ रास्ते पर चल पड़ा। डेढ़ मील तक आगे चले जाने के बाद उसे पता चला कि वह रास्ता भटक गया है। वह फिर वापस लौटा। इस सारे घटनाक्रम में चार-पाँच बजे के लगभग वह अपने मित्र सुमति के पास पहुँच सका। वह उसका इंतज़ार कर रहा था और गुस्से में था। मंगोल तो वैसे भी लाल मुँह के होते हैं। गुस्से में ही सुमति ने लेखक से कहा–

"मैंने दो टोकरी कंडे फूँक डाले, तीन-तीन बार चाय को गरम किया।"

लेखक ने सुस्त घोड़े की अपनी विवशता बताई तो वह शांत हो गया। लह्कोर में वे एक अच्छी जगह पर ठहरे। यहाँ के यजमानों से उन्हें सत्तू, चाय और गरमागरम थुक्पा खाने को मिला।

तिङ्री-समाधि-गिरि पर–आगे वह तिङ्री के विशाल मैदान में पहुँचे, जिसके चारों ओर पहाड़ियों-ही-पहाड़ियाँ थीं। इस विशाल मैदान के भीतर भी एक पहाड़ी थी। इसी पहाड़ी का नाम है–तिङ्री-समाधि-गिरि। उसके आस-पास अनेक गाँव थे, जिनमें सुमति के यजमान रहते थे। सुमति अपने यजमानों से मिलने सब जगह जाना चाहते थे, जिससे कि वे गंडे पहुँचा सकें। गंडे कपड़े की पतली-पतली चिरी हुई बत्तियों से बनते थे। गंडे खत्म हो जाने पर वे लोग और कपड़ों से गंडे बना लेते थे। लेखक ने सुमति को आस-पास के गाँवों में न जाने के लिए राज़ी कर लिया। लेखक ने सुमति से कहा कि इसके लिए वह ल्हासा पहुँचकर उसे रुपये दे देगा।

तिब्बत की तेज़ धूप–लेखक सुमति के साथ आगे बढ़ा। 10-11 बजे की तेज़ धूप का उन्हें सामना करना पड़ रहा था। उसने अनुभव किया कि तिब्बत की धूप यों तो बहुत तेज़ जलाने वाली कड़ी धूप थी, परंतु यदि थोड़े-से भी मोटे कपड़े से सिर ढाँप लिया जाए तो गरमी खत्म हो जाती है। मज़े की बात यह है कि दो बजे की धूप में आपका खुला माथा तो आग-सा जलने लगता है और पीछे का कंधा ठंड से बरफ जैसा लगता है। लेखक ने धूप से बचने के लिए सिर पर मोटा कपड़ा डाला, पीठ पर अपनी चीज़ें लादीं और डंडा हाथ में लेकर फिर यात्रा आरंभ कर दी।

शेकर विहार–तिब्बत की ज़मीन छोटे-बड़े जागीरदारों में बँटी हुई है। इन जागीरों का बड़ा भाग मठों (विहारों) के हाथ में था। हरेक जागीरदार अपनी-अपनी जागीर में बेगारी के मज़दूरों से खेती कराता है। जागीर की खेती का इंतज़ाम देखने के लिए कोई भिक्षु भेजा जाता है, जो जागीर के आदमियों के लिए राजा से कम नहीं होता। शेकर की खेती के मुखिया भिक्षु (नम्से) बड़े भद्र पुरुष थे। लेखक और सुमति से वे बड़े प्यार से मिले। लेखक का वेश यद्यपि भिखमंगे का-सा था, फिर भी लेखक ने भिक्षु से ऐसे ही व्यवहार की कल्पना

की थी। यहाँ पर एक बौद्ध मंदिर था, जिसमें कंजुर (बुद्धवचन-अनुवाद) की हस्तलिखित 103 पोथियाँ संरक्षित थीं। लेखक ने अपना आसन वहीं जमा लिया। पोथियाँ मोटे-मोटे अक्षरों में लिखी हुई थीं। एक-एक पोथी 15-15 सेर से कम वजन की नहीं थी। लेखक उन पुस्तकों में डूब गया। सुमति ने मौका देखकर अपने यजमानों के पास जाने के लिए पूछा तो लेखक ने उसे अनुमति दे दी। वह गया और उसी दिन दोपहर बाद लौट आया। अगले दिन वे लोग भिक्षु नम्से से विदाई लेकर चल दिए।

भाग-1

(बहुविकल्पीय प्रश्न)

गद्यांशों पर आधारित प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

(1) वह नेपाल से तिब्बत जाने का मुख्य रास्ता है। फरी-कलिङ्पोङ् का रास्ता जब नहीं खुला था तो नेपाल ही नहीं, हिंदुस्तान की भी चीज़ें इसी रास्ते तिब्बत जाया करती थीं। यह व्यापारिक ही नहीं, सैनिक रास्ता भी था, इसीलिए जगह-जगह फ़ौजी चौकियों और किले बने हुए हैं, जिनमें कभी चीनी पलटन रहा करती थी। आजकल बहुत-से फ़ौजी-मकान गिर चुके हैं। दुर्ग के किसी भाग में, जहाँ किसानों ने अपना बसेरा बना लिया है, वहाँ घर कुछ आबाद दिखाई पड़ते हैं।

1. गद्यांश में किस मार्ग की बात की गई है–
(क) दिल्ली से मुंबई जाने वाले मार्ग की
(ख) नेपाल से तिब्बत जाने वाले मार्ग की
(ग) भारत से भूटान जाने वाले मार्ग की
(घ) पटना से नेपाल जाने वाले मार्ग की।

2. नेपाल-तिब्बत मार्ग का क्या महत्त्व है–
(क) यह नेपाल से तिब्बत जाने का मुख्य मार्ग है।
(ख) यह एक व्यापारिक मार्ग है।
(ग) यह सैनिक रास्ता भी है।
(घ) उपर्युक्त सभी।

3. नेपाल-तिब्बत मार्ग पर फ़ौजी चौकियाँ और किले क्यों बने हैं–
(क) सुरक्षा की दृष्टि से
(ख) यहाँ भारत-चीन का युद्ध हुआ था
(ग) पहले यह सैनिक मार्ग था
(घ) उपर्युक्त सभी।

4. आजकल फ़ौजी मकानों की क्या दशा है–
(क) वे गिर चुके हैं
(ख) उनका नवनिर्माण किया गया है
(ग) उन्हें ध्वस्त का दिया गया है
(घ) वे पहले जैसे ही हैं।

5. दुर्ग में किसने बसेरा बना लिया है–
(क) जवानों ने (ख) किसानों ने
(ग) पक्षियों ने (घ) जंगली जानवरों ने।

उत्तर– 1. (ख) **2.** (घ) **3.** (ग) **4.** (क) **5.** (ख)।

(2) तिब्बत में यात्रियों के लिए बहुत-सी तकलीफ़ें भी हैं और कुछ आराम की बातें भी। वहाँ जाति-पाँति, छुआछूत का सवाल ही नहीं है और न औरतें परदा ही करती हैं। बहुत निम्न-श्रेणी के भिखमंगों को लोग चोरी के डर से घर के भीतर नहीं आने देते, नहीं तो आप बिलकुल घर के भीतर चले जा सकते हैं। चाहे आप बिलकुल अपरिचित हों, तब भी घर की बहू या सासु को अपनी झोली में से चाय दे सकते हैं। वह आपके लिए उसे पका देगी। मक्खन और सोडा-नमक दे दीजिए, वह चाय चोड़ी में कूटकर उसे दूधवाली चाय के रंग की बना के मिट्टी के टोंटीदार बरतन (खोटी) में रखके आपको दे देगी।

1. तिब्बत में यात्रियों के लिए क्या है–
(क) ठहरने के लिए धर्मशालाएँ
(ख) देखने के लिए दर्शनीय स्थल
(ग) बहुत-सी तकलीफें और कुछ आराम
(घ) जान का खतरा।

2. तिब्बती समाज की क्या विशेषता है–
(क) वहाँ जाति-पाँति का भेद नहीं है।
(ख) वहाँ छुआछूत नहीं है।
(ग) वहाँ औरतें परदा नहीं करतीं।
(घ) उपर्युक्त सभी।

3. भिखमंगों को लोग घर के भीतर क्यों नहीं आने देते–
(क) चोरी के डर से
(ख) भीख देने से बचने के कारण
(ग) घृणा के कारण
(घ) उपर्युक्त सभी।

4. घर की बहू या सास अपरिचित अतिथियों के लिए क्या करती हैं–
(क) भोजन बनाती हैं (ख) चाय बनाती हैं
(ग) बिस्तर लगाती हैं (घ) इनमें से कुछ नहीं।

5. तिब्बती औरतें चाय कैसे बनाती हैं–
(क) चाय-पत्ती, चीनी और दूध डालकर
(ख) चाय-पत्ती और चीनी डालकर
(ग) मक्खन और सोड़ा-नमक डालकर
(घ) चाय-पत्ती और शहद डालकर।

उत्तर– 1. (ग) **2.** (घ) **3.** (क) **4.** (ख) **5.** (ग)।

(3) परित्यक्त चीनी किले से जब हम चलने लगे तो एक आदमी राहदारी माँगने आया। हमने वह दोनों चिटें उसे दे दीं। शायद उसी दिन हम थोङ्ला के पहले के आखिरी गाँव में पहुँच गए। यहाँ भी सुमति के जान-पहचान के आदमी थे और भिखमंगे रहते भी ठहरने के लिए अच्छी जगह मिली। पाँच साल बाद हम इसी रास्ते लौटे थे और भिखमंगे नहीं, एक भद्र यात्री के वेश में घोड़ों पर सवार होकर आए थे, किंतु उस वक्त किसी ने हमें रहने के लिए जगह नहीं दी और हम गाँव के एक सबसे गरीब झोपड़े में ठहरे थे। बहुत कुछ लोगों की उस वक्त की मनोवृत्ति पर ही निर्भर है, खासकर शाम के वक्त छङ् पीकर बहुत कम होश-हवास को दुरुस्त रखते हैं।

1. जब लेखक परित्यक्त चीनी किले से चला तो एक आदमी क्या माँगने आया–
(क) कपड़े (ख) चटाई
(ग) शहदारी (घ) पुस्तकें।

2. 'शहदारी' का तात्पर्य है–
(क) यात्रा का खर्च (ख) यात्रा की सुरक्षा
(ग) यात्रा करने का कर (घ) इनमें से कोई नहीं।

3. लेखक इस समय किस वेश में था–
(क) भिखमंगे के वेश में (ख) सैनिक के वेश में
(ग) राजा के वेश में (घ) साधु के वेश में।

4. लेखक कितने वर्ष बाद वापस आया–
(क) दो वर्ष बाद (ख) तीन वर्ष बाद
(ग) चार वर्ष बाद (घ) पाँच वर्ष बाद।

5. यात्रा से वापस लौटते समय लेखक गाँव में कहाँ ठहरे–
(क) मंदिर में (ख) गाँव की चौपाल में
(ग) गाँव के सबसे गरीब झोपड़े में (घ) मुखिया के घर पर।

उत्तर– 1. (ग) **2.** (ग) **3.** (क) **4.** (घ) **5.** (ग)।

(4) अब हमें सबसे विकट डाँड़ा थोड़्ला पार करना था। डाँड़े तिब्बत में सबसे खतरे की जगहें हैं। सोलह-सत्रह हज़ार फीट की ऊँचाई होने के कारण उनके दोनों तरफ़ मीलों तक कोई गाँव-गिराँव नहीं होते। नदियों के मोड़ और पहाड़ों के कोनों के कारण बहुत दूर तक आदमी को देखा नहीं जा सकता। डाकुओं के लिए यही सबसे अच्छी जगह है। तिब्बत में गाँव में आकर खून हो जाए, तब तो खूनी को सज़ा भी मिल सकती है, लेकिन इन निर्जन स्थानों में मरे हुए आदमियों के लिए कोई परवाह नहीं करता। सरकार खुफ़िया-विभाग और पुलिस पर उतना खर्च नहीं करती और वहाँ गवाह भी तो कोई नहीं मिल सकता। डकैत पहिले आदमी को मार डालते हैं, उसके बाद देखते हैं कि कुछ पैसा है कि नहीं। हथियार का कानून न रहने के कारण यहाँ लाठी की तरह लोग पिस्तौल, बंदूक लिए फिरते हैं। डाकू यदि जान से न मारे तो खुद उसे अपने प्राणों का खतरा है।

1. तिब्बत में डाँड़ा किसे कहते हैं–
(क) ऊँचे पर्वतों को
(ख) पठारों को
(ग) घाटियों को
(घ) पहाड़ों के सीमांत ऊँचे स्थलों को।

2. डाँड़े तिब्बत में कैसी जगहें हैं–
(क) सबसे सुरक्षित (ख) सबसे खतरे की
(ग) सबसे सुंदर (घ) सबसे गंदी।

3. डाँड़े डाकुओं के लिए सबसे सुरक्षित जगहें क्यों हैं–
(क) यहाँ उन पर पलटवार करने वाला कोई नहीं होता
(ख) उन्हें हत्या या डकैती करते देखने वाला कोई नहीं होता
(ग) यहाँ उन्हें अपनी सुरक्षा का कोई खतरा नहीं होता
(घ) उपर्युक्त सभी।

4. तिब्बत में कौन-सा कानून नहीं है–
(क) यातायात का (ख) सुरक्षा का
(ग) हथियार का (घ) इनमें से कोई नहीं।

5. डाकू यात्रियों को लूटने से पहले मारते क्यों हैं–
(क) यह डाकुओं की परंपरा है
(ख) डाकुओं को इसमें आनंद आता है
(ग) उन्हें यात्रियों से अपने प्राणों का खतरा होता है
(घ) उपर्युक्त सभी।

उत्तर– 1. (घ) **2.** (ख) **3.** (घ) **4.** (ग) **5.** (ग)।

(5) तिब्बत की ज़मीन बहुत अधिक छोटे-बड़े जागीरदारों में बँटी है। इन जागीरों का बहुत ज़्यादा हिस्सा मठों (विहारों) के हाथ में है। अपनी-अपनी जागीर में हरेक जागीरदार कुछ खेती खुद भी कराता है, जिसके लिए मज़दूर बेगार में मिल जाते हैं। खेती का इंतज़ाम देखने के लिए वहाँ कोई भिक्षु भेजा जाता है, जो जागीर के आदमियों के लिए राजा से कम नहीं होता। शेकर की खेती के मुखिया भिक्षु (नम्से) बड़े भद्र पुरुष थे। वह बहुत प्रेम से मिले, हालाँकि उस वक्त मेरा भेष ऐसा नहीं था कि उन्हें कुछ भी खयाल करना चाहिए था।

1. तिब्बत की ज़मीन किनमें बँटी थी–
(क) किसानों में (ख) जागीरदारों में
(ग) सूबेदारों में (घ) जमींदारों में।

2. जागीरों का बहुत ज्यादा हिस्सा किसके हाथ में था–
(क) सरकार के (ख) किसानों के
(ग) मठों (विहारों) के (घ) व्यापारियों के।

3. जागीरदार को खेती के लिए मज़दूर कैसे मिलते थे–
(क) बहुत सस्ते (ख) बहुत महँगे
(ग) बेगार में (घ) ये सभी।

4. मठ की खेती का इंतजाम देखने के लिए किसे भेजा जाता था–
(क) मज़दूरों को (ख) चौकीदार को
(ग) माली को (घ) किसी भिक्षु को।

5. नम्से कौन था–
(क) शेकर विहार की खेती का मुखिया
(ख) गाँव का मुखिया
(ग) शेकर विहार का चौकीदार
(घ) शेकर विहार का रसोइया।

उत्तर– 1. (ख) **2.** (ग) **3.** (ग) **4.** (घ) **5.** (क)।

पाठ पर आधारित प्रश्न

निर्देश–निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–

1. 'ल्हासा की ओर' पाठ के लेखक का नाम है–
(क) प्रेमचंद (ख) राहुल सांकृत्यायन
(ग) श्यामाचरण दुबे (घ) हरिशंकर परसाई।

2. लेखक कहाँ की यात्रा पर गया था–
(क) नेपाल की (ख) चीन की
(ग) तिब्बत की (घ) भूटान की।

3. उस समय किसी भी भारतीय को कहाँ जाने की मनाही थी–
(क) तिब्बत (ख) चीन
(ग) नेपाल (घ) श्रीलंका।

4. लेखक गलत रास्ते पर कितने मील चला गया–
(क) 1 मील से ज्यादा (ख) 2 मील से ज्यादा
(ग) 3 मील से ज्यादा (घ) 7 मील।

5. 'थुक्पा' क्या है–
(क) एक स्थान (ख) एक वस्त्र
(ग) एक जानवर का नाम (घ) एक खाद्य पदार्थ

6. तिब्बत की ऊँचाई कितनी थी–
(क) 12000-13000 फीट (ख) 13000-14000 फीट
(ग) 15000-16000 फीट (घ) 1600-1700 फीट।

7. लेखक ने डाँड़े की चढ़ाई के लिए किसकी सहायता ली–
(क) मित्र की (ख) गाड़ी की
(ग) बस की (घ) घोड़े की।

8. तिब्बत की जमीनों पर किनका आधिपत्य था–
(क) मजदूरों का (ख) सरकार का
(ग) लुटेरों का (घ) जागीरदारों का।

9. 'भरिया किसे कहते हैं'–
(क) कुली को (ख) मज़दूर को
(ग) पुरोहित को (घ) किसान को।

10. तिङ्री के मैदान की क्या विशेषता थी–
(क) वह बिलकुल समतल था
(ख) वहाँ की मिट्टी बहुत उपजाऊ थी
(ग) वह पहाड़ों से घिरा एक टापू था
(घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

11. सुमति कौन था–
(क) एक तिब्बती (ख) एक चीनी
(ग) लेखक का मित्र (घ) एक साहित्यकार।

12. यात्रा से वापस लौटते समय लेखक किस वेश में था–
(क) भद्र वेश में (ख) भिखमंगे के वेश में
(ग) साधु के वेश में (घ) सैनिक के वेश में।

13. शेकर विहार में कंजुर की हस्तलिखित कितनी पोथियाँ रखी थीं–

(क) 105 (ख) 103

(ग) 110 (घ) 112.

14. सुमति अपने यजमानों को क्या बाँटता था–

(क) मालाएँ (ख) गंडे

(ग) मिठाइयाँ (घ) वस्त्र।

15. तिब्बत में किस धर्म के अनुयायी रहते हैं–

(क) हिंदू धर्म के (ख) मुस्लिम धर्म के

(ग) बौद्ध धर्म के (घ) जैन धर्म के।

16. यात्रा से वापस आते समय लेखक को गाँव में ठहरने का स्थान क्यों नहीं मिला–

(क) वह भिखमंगे के वेश में था

(ख) वह भद्र वेश में था

(ग) वह वहाँ शाम के समय आया था

(घ) वह वहाँ दिन के समय आया था।

17. लंड्कोर के मार्ग में लेखक अपने साथी से क्यों पिछड़ गया–

(क) उसका घोड़ा थककर धीरे-धीरे चलने लगा था

(ख) वह अपने घोड़े को मारना नहीं चाहता था

(ग) वह एक जगह दोराहे पर रास्ता भटक गया

(घ) उपर्युक्त सभी।

18. शेकर विहार का मुखिया कौन था–

(क) नम्से (ख) सुमति

(ग) शंकर (घ) इनमें से कोई नहीं।

19. शेकर विहार में रखी एक-एक पोथी का वजन होगा–

(क) 10 सेर (ख) 5 सेर

(ग) 15 सेर (घ) 20 सेर।

20. 'मैं अब पुस्तकों के भीतर था।' का अर्थ है–

(क) लेखक के चारों ओर पुस्तकें थीं।

(ख) लेखक पुस्तकें पढ़ने में रम गया।

(ग) लेखक पुस्तकों में छिप गया।

(घ) पुस्तकों में लेखक के चित्र थे।

उत्तर– 1. (ख) **2.** (ग) **3.** (क) **4.** (क) **5.** (घ) **6.** (घ) **7.** (घ) **8.** (घ) **9.** (क) **10.** (ग) **11.** (ग) **12.** (क) **13.** (ख) **14.** (ख) **15.** (ग) **16.** (ग) **17.** (घ) **18.** (क) **19.** (ग) **20.** (क)।

भाग-2
(वर्णनात्मक प्रश्न)

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

प्रश्न 1 : लेखक द्वारा भिखमंगे का वेश बनाकर यात्रा करने का उद्देश्य क्या था?

उत्तर : तिब्बत के पहाड़ों में यात्रा करना भारी जोखिम का काम था। लूटपाट, डकैती और हत्या का भय बराबर बना रहता था। अधिकतर हत्याएँ होती ही लूटपाट के उद्देश्य से थीं। लेखक व्यावहारिक बुद्धि का चतुर व्यक्ति था। उसने एक उपाय सोचा। उसने भिखमंगे का वेश बनाया और जब कोई संदिग्ध व्यक्ति (डाकू लगने वाला व्यक्ति) सामने आता तो वह जीभ निकालकर "कुची-कुची (दया-दया) एक पैसा" कहकर भीख माँगने को हाथ फैला देता। उसके भिखारी वेश से उसके जान-माल दोनों की रक्षा हो जाती थी।

प्रश्न 2 : नम्से कौन था? उसकी चारित्रिक विशेषताएँ बताइए।

उत्तर : नम्से बौद्ध भिक्षु था। वह शेकर विहार नामक जागीर का प्रमुख भिक्षु था। जागीर-प्रमुख होने के कारण जागीर के निवासियों में उसका खूब सम्मान था। वह स्वभाव से एक भद्र पुरुष था। उसके हृदय में प्रबंधक या प्रमुख होने का अहंकार नहीं था। वह एक सच्चा साधु था। वह लेखक से बड़े प्रेमपूर्वक मिला। लेखक भिखमंगे की वेशभूषा के कारण उससे किसी आदर-सम्मान या स्नेह की अपेक्षा नहीं करता था, परंतु नम्से ने उसके साथ सम्मान और प्रेमपूर्ण व्यवहार किया।

प्रश्न 3 : शेकर विहार के बौद्ध-ग्रंथों का परिचय दीजिए।

उत्तर : शेकर विहार के एक मंदिर में बौद्ध-ग्रंथों की हस्तलिखित प्रतियाँ रखी हुई थीं। बुद्ध के वचनों की हस्तलिखित अनुवादों की ये पोथियाँ संख्या में 103 थीं। इन पोथियों को तिब्बत में 'कंजुर' कहते हैं। उन पोथियों में काफ़ी मोटे कागज़ लगे थे। उन कागज़ों पर सुंदर अक्षरों में बुद्ध-वचन लिखे हुए थे। एक-एक पोथी का वजन 15-15 सेर रहा होगा।

प्रश्न 4 : तिब्बत में किस धर्म के अनुयायी रहते हैं? प्रमाणसहित लिखिए।

उत्तर : तिब्बत में बौद्ध-धर्म के अनुयायी रहते हैं। इसका प्रमाण यह है कि बौद्ध-भिक्षु सुमति के यजमान लगभग हर गाँव में हैं। सुमति स्वयं मंगोल जाति का है। सुमति की तरह ही यहाँ के अधिकांश लोग बौद्ध-धर्म से प्रभावित हैं। सुमति सभी यजमानों को बोधगया से गंडा लाकर भेंट करता है। 'गंडा' जैसे धार्मिक प्रतीक से सुमति और उसके यजमान आपस में जुड़े रहते हैं।

प्रश्न 5 : लड्कोर पहुँचने में लेखक को देर क्यों हुई? सुमति ने वहाँ उसके साथ कैसा व्यवहार किया?

उत्तर : लेखक का घोड़ा बहुत सुस्त था तथा लेखक को डेढ़ मील तक आगे चले जाने के बाद पता चला कि वो रास्ता भटक गया है। वह फिर वापस लौटा तब तक शाम के चार-पाँच बज गए थे।

लेखक को देखते ही सुमति पूरे गुस्से में बोले कि दो टोकरी कंडे तो उसने लेखक की चाय को तीन-तीन बार गरम करने के चक्कर में फूँक डाले। लेकिन लेखक ने जब अपनी विवशता बताई तो वह ज़रूरी ही शांत भी हो गए। बाद में लेखक व सुमति ने चाय-सत्तू खाया और रात को गरमागरम थुक्पा का आनंद भी लिया।

प्रश्न 6 : यात्रा में जाते समय भिखमंगे के वेश में होने पर भी लेखक को गाँव में ठहरने के लिए स्थान मिल गया, जबकि आते समय भद्रवेश में होने पर भी ठहरने का स्थान नहीं मिला। क्यों?

उत्तर : यात्रा में जाते समय लेखक को ठहरने का स्थान इसलिए मिल गया; क्योंकि वे वहाँ दिन के समय पहुँचे थे और वहीं उनके साथी सुमति के अनेक जानकार थे। आते समय यद्यपि वे भद्र वेश में थे और घोड़ों पर चढ़कर आए थे, फिर भी उन्हें स्थान नहीं मिला, इसका कारण यह था कि वे वहाँ शाम के समय पहुँचे थे। शाम के समय वहाँ के लोग छङ् पीकर नशे में हो जाते हैं और किसी से बात नहीं करते।

प्रश्न 7 : उस समय के तिब्बत में हथियार का कानून न रहने के कारण यात्रियों को किस प्रकार का भय बना रहता था?

उत्तर : हथियार का कानून न होने से उस समय तिब्बत में यात्रियों को जान का भय बना रहता था। लोग लाठी-डंडों की तरह बंदूक और पिस्तौल लिए घूमते थे। डाकू पहले यात्रियों को मारते थे, बाद में तलाशी लेते थे। ऐसा वे इसलिए करते थे; क्योंकि उन्हें यात्रियों से अपनी जान का खतरा होता था।

प्रश्न 8 : लेखक लड्कोर के मार्ग में अपने साथियों से किस कारण पिछड़ गया?

उत्तर : लेखक निम्नलिखित कारणों से पिछड़ गया–

(i) चढ़ाई के कारण उसका घोड़ा थक गया था और धीरे-धीरे चलने लगा था।

(ii) वह अपने घोड़े को मारना-पीटना नहीं चाहता था।

(iii) एक जगह वह मार्ग भटककर गलत मार्ग पर करीब डेढ़ मील चला गया और जब तक वापस सही रास्ते पर आया तब तक वह बहुत पिछड़ गया था।

प्रश्न 9 : लेखक ने शेकर विहार में पहले सुमति को उनके यजमानों के पास जाने से रोका, परंतु दूसरी बार रोकने का प्रयास क्यों नहीं किया?

उत्तर : लेखक ने शेकर विहार में सुमति को उसके यजमानों के पास जाने से इसलिए रोका; क्योंकि उसे डर था कि वह वहाँ बहुत समय लगा देगा। यदि ऐसा होता तो शायद लेखक को एक सप्ताह तक उसकी प्रतीक्षा करनी पड़ती।

दूसरी बार लेखक को वहाँ के मंदिर में रखी अनेक बहुमूल्य पुस्तकें मिल गई थीं। वह एकांत में बैठकर उनका अध्ययन-मनन करना चाहता था, इसलिए उसने सुमति को अपने यजमानों से मिलने के लिए जाने की अनुमति दे दी।

प्रश्न 10 : अपनी यात्रा के दौरान लेखक को किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा?

उत्तर : अपनी यात्रा के दौरान लेखक को निम्नलिखित कठिनाइयों का सामना करना पड़ा–

(i) वापसी के समय उसे रुकने के लिए अच्छा स्थान न मिला, इसलिए उसे एक बहुत गरीब झोपड़े में रुकना पड़ा।

(ii) लेखक को अनेक बार डाकुओं के सामने दया की भीख माँगने का नाटक करना पड़ा, जिससे उसके प्राण बच जाएँ।

(iii) लेखक का घोड़ा उतराई के समय बहुत धीरे-धीरे चल रहा था, जिससे लेखक पिछड़ गया।

(vi) लेखक को भार ढोने के लिए कोई भरिया (पहाड़ी कुली) न मिला।

(v) लेखक को तिब्बत की कड़ी धूप का सामना करना पड़ा।

प्रश्न 11 : भारत की तुलना में तिब्बती महिलाओं की स्थिति का आकलन कीजिए।

उत्तर : भारत की तुलना में तिब्बती महिलाओं की स्थिति अधिक सुरक्षित कही जा सकती है। भारतीय महिलाएँ पुरुषों से परदा करना या दूरी बनाए रखना पसंद करती हैं। वे किसी अपरिचित को अपने घर में प्रवेश की अनुमति नहीं देतीं। घर के भीतर तक किसी अपरिचित पुरुष के जाने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। कारण यह है कि भारतीय स्त्रियाँ पुरुषों से स्वयं को असुरक्षित अनुभव करती हैं।

तिब्बती महिलाएँ पुरुषों से परदा नहीं करतीं। उन्हें किसी के घर के भीतर तक आने से भी कोई भय नहीं लगता। वे सहज रूप से किसी अपरिचित पुरुष को भी घर के अंदर तक आने देती हैं, उसका सहर्ष स्वागत करती हैं। उन्हें पुरुषों से अपनी सुरक्षा को लेकर कोई खतरा नहीं लगता।

प्रश्न 12 : 'ल्हासा की ओर' पाठ के आधार पर बताइए कि उस समय का तिब्बती समाज कैसा था?

उत्तर : तिब्बती समाज में छुआछूत और जाति-पाँति का भेदभाव नहीं था। स्त्रियाँ परदा नहीं करती थीं। अपरिचित मेहमानों का भी सत्कार किया जाता था। जागीरदारी प्रथा थी। हथियार का कानून नहीं था। यात्रा में चोर-डाकुओं का भय था। लोग बौद्ध-धर्म को मानते थे। ताबीज़-गंडों पर भी लोगों को अंधविश्वास था।

प्रश्न 13 : सुमति के यजमान और अन्य परिचित लोग लगभग प्रत्येक गाँव में मिले। इस आधार पर सुमति के व्यक्तित्व की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर : सुमति के यजमान और उसके अन्य परिचित लोग लगभग प्रत्येक गाँव में मिले, इससे यह स्पष्ट होता है कि उसकी जान-पहचान का क्षेत्र व्यापक है। तिङ्री के प्रत्येक गाँव में उसके परिचित हैं। सुमति उनके यहाँ धर्मगुरु के रूप में सम्मान पाता है। घर में लोग प्रेमपूर्वक उसका स्वागत-सत्कार करते हैं। सुमति अपने परिचितों के लिए बोधगया से गंडे लेकर आता है। लोगों की 'गंडे' में आस्था है, अतः उसे पाकर वे अत्यंत प्रसन्न होते हैं।

जिस प्रकार का आदर-सम्मान उसे मिलता है, उससे ऐसा प्रतीत होता है कि सुमति का स्वभाव सरल, स्नेही, सहानुभूतिपूर्ण मृदु एवं मिलनसार रहा होगा।

अभ्यास प्रश्न

निर्देश–निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–

परित्यक्त चीनी किले से जब हम चलने लगे तो एक आदमी राहदारी माँगने आया। हमने वह दोनों चिटें उसे दे दीं। शायद उसी दिन हम थोङ्ला के पहले के आखिरी गाँव में पहुँच गए। यहाँ भी सुमति के जान-पहचान के आदमी थे और भिखमंगे रहते भी ठहरने के लिए अच्छी जगह मिली। पाँच साल बाद हम इसी रास्ते लौटे थे और भिखमंगे नहीं, एक भद्र यात्री के वेश में घोड़ों पर सवार होकर आए थे, किंतु उस वक्त किसी ने हमें रहने के लिए जगह नहीं दी और हम गाँव के एक सबसे गरीब झोपड़े में ठहरे थे। बहुत कुछ लोगों की उस वक्त की मनोवृत्ति पर ही निर्भर है, खासकर शाम के वक्त छङ् पीकर बहुत कम होश-हवास को दुरुस्त रखते हैं।

1. **जब लेखक परित्यक्त चीनी किले से चला तो एक आदमी क्या माँगने आया–**
   (क) कपड़े (ख) चटाई
   (ग) शहदारी (घ) पुस्तकें।
2. **'शहदारी' का तात्पर्य है–**
   (क) यात्रा का खर्च (ख) यात्रा की सुरक्षा
   (ग) यात्रा करने का कर (घ) इनमें से कोई नहीं।
3. **लेखक इस समय किस वेश में था–**
   (क) भिखमंगे के वेश में (ख) सैनिक के वेश में
   (ग) राजा के वेश में (घ) साधु के वेश में।
4. **लेखक कितने वर्ष बाद वापस आया–**
   (क) दो वर्ष बाद (ख) तीन वर्ष बाद
   (ग) चार वर्ष बाद (घ) पाँच वर्ष बाद।
5. **यात्रा से वापस लौटते समय लेखक गाँव में कहाँ ठहरे–**
   (क) मंदिर में (ख) गाँव की चौपाल में
   (ग) गाँव के सबसे गरीब झोपड़े में (घ) मुखिया के घर पर।

निर्देश–निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–

6. **तिब्बत की ऊँचाई कितनी थी–**
   (क) 12000-13000 फीट (ख) 13000-14000 फीट
   (ग) 15000-16000 फीट (घ) 1600-1700 फीट।
7. **यात्रा से वापस लौटते समय लेखक किस वेश में था–**
   (क) भद्र वेश में (ख) भिखमंगे के वेश में
   (ग) साधु के वेश में (घ) सैनिक के वेश में।
8. **शेकर विहार का मुखिया कौन था–**
   (क) नम्से (ख) सुमति
   (ग) शंकर (घ) इनमें से कोई नहीं।

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

9. नम्से कौन था? उसकी चारित्रिक विशेषताएँ बताइए।
10. यात्रा में जाते समय भिखमंगे के वेश में होने पर भी लेखक को गाँव में ठहरने के लिए स्थान मिल गया, जबकि आते समय भद्रवेश में होने पर भी ठहरने का स्थान नहीं मिला। क्यों?
11. अपनी यात्रा के दौरान लेखक को किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा?
12. 'ल्हासा की ओर' पाठ के आधार पर बताइए कि उस समय का तिब्बती समाज कैसा था?

●